सकल साथ, रखे कोई वचन विसारो जी।
धणी मल्या आपणने मायामां, अवसर आज तमारो जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आज हमें श्री राजजी महाराज माया में मिले हैं। आज मौका तुम्हारे हाथ आया है। मेरे वचनों को कोई भुला नहीं देना।

सुंदरबाई अंतरगत कहावे, प्रकास वचन अति भारी जी।
साथ सकल तमे मली सांभलो, जो जो तारतम विचारी जी।। २ ।।

मेरे अन्दर बैठकर श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) कहलाती हैं कि ज्ञान के वचन बहुत भारी हैं। हे साथजी! तारतम ज्ञान को सब मिलकर विचारो।

साथ जी एणे पगले चालजो रे, पगला ते एह प्रमाण जी।
प्रगट तमने पेहेले कह्यूं, वली कहूं छू निरवाण जी।। ३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यही प्रामाणिक (सच्चा) रास्ता है। इस पर ही चलना। तुमको पहले भी स्पष्ट कहा है और फिर से साफ कहती हूं।

हवे रखे माया मन धरो, तमे जोई ते अनेक जुगत जी।
कई कई पेरे कह्यूं में तमने, तमे हजी न पाम्या तृपित जी।। ४ ।।

हे साथजी! अब अपने मन को माया से हटाओ। तुमने अनेक प्रकार से इसको देख लिया है और मैंने भी आपको तरह-तरह से समझाया है, फिर भी तुम्हारा मन इससे भरा नहीं।

जिहां लगे तमे रहो रे मायामां, रखे खिण मूको रास जी।
पचवीस पख लेजो आपणां, तमने नहीं लोपे मायानों पास जी।। ५ ।।

हे साथजी! जब तक माया में रहो रास की वाणी को पलभर के लिए भी भूलना नहीं। परमधाम के पच्चीस पक्षों को यदि सदा अपने चित्त में रखो (ध्यान परमधाम में ही रखोगे) तो माया का रंग तुम्हारे ऊपर नहीं चढ़ सकता। (माया कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती)।

अनेक विध में घणुंए कह्यूं, हवे रखे खिण विहिला थाओ जी।
रासतणी रामतडी जो जो, जे भरियां आपण पांउं जी।। ६ ।।

हे साथजी! मैंने तुमको तरह-तरह से समझाया। अब एक पलभर के लिए आप राजजी महाराज से अलग मत होना। रास की रहनी पर अब भी चलें। जिस प्रकार हमने संसार को छोड़ा था।

रास रामतडी रखे खिण मूको, जे आपण कीधी परमाण जी।
तमे घणुए नव मूको माया, पण हूं नहीं मूकूं निरवाण जी।। ७ ।।

रास का ज्ञान (रहनी) पल भर भी न छोड़ें। वह अपनी बीती बात है। तुमसे तो माया नहीं छूटती और धनी कहते हैं मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।

कहे इंद्रावती वचन वालाना, जे सुणया आपण सार जी।
हवे लाख वातो जो करे रे माया, तोहे नहीं मूकूं चरण निरधार जी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि श्री राजजी महाराज की वाणी से हमको सार वस्तु (परमधाम की पहचान) मिली। अब माया कितना भी मुझे फंसावे तो भी मैं धनी के चरण नहीं छोड़ूंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २८ ॥

Nijanand App